राजनीति विज्ञान प्रतिष्ठा

कार्ल मार्क्स

मार्क्स का अलगाव का सिद्धान्त —

वह वस्तु स्वायत्त शक्ति के रूप में उसके विरोध में स्थित होती है। तीसरे: अलगाव इस कारण भी होता है क्योंकि श्रमिक के लिए वह कार्य स्वैच्छिक नहीं होता बल्कि वह उसपर जबरन थोपा जाता है। यह एक प्रकार की जबरन मजदूरी है जो उसे करनी पड़ती है यह कार्य उसकी अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए नहीं होता, बल्कि दूसरों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होता है। इसीलिए इसका वह काम उसके लिए नीरस मजबूरी होती है जो उबाऊ और थकाने वाली होती है। बारह घंटे तक वह श्रमिक बुनाई और कताई करता है, वह मशीन छेद सकता है और कटाई करता है, वह मकान बनाता है, बेलचे से मिट्टी फेंकता है, पत्थर तोड़ता है, सिर पर बोझा ढोता है उसे मालूम नहीं होता है कि वे सब काम क्यों कर रहा है। अलगाव का एक और पहलू है जीवित श्रमिक के श्रम के ऊपर मृत, पशु, निर्माणकारी मशीनी श्रम का वर्चस्व। इस प्रक्रिया में कामगार या श्रमिक मशीन का उपांग बन जाता है, उसका उत्पाद और

उसकी मशीनें उसके वास्तविक मालिक बन जाते हैं। वह स्वयं से पराया हो जाता है इस कारण से मनुष्य स्वयं को केवल जैव कार्यों (जैसे खाना, पीना, बच्चे पैदा करना इत्यादि में ही स्वतंत्र अनुभव करता है जबकि उसके मानवीय कार्यों में उसकी स्थिति जानवरों जैसी होती है। इसके भीतर का जानवर इन्सान बन जाता है, उसके अंदर का मानव जानवर के समान हो जाता है मार्क्स आगे इसकी व्याख्या करते हुए कहता है कि :

जितना कम तुम खाओगे, पिओगे, पुस्तकें खरीदोगे, सिनेमा देखोगे, मयखाने या सभाओं में जाओगे और जितना तुम सोचोगे, प्यार करोगे, नाचो-गाओगे, चित्र बनाओगे आदि उतना ही तुम बचत कर सकोगे, और उतना ही अधिक तुम्हारा खजाना बढ़ेगा, जिसे न तो कीड़े खाएंगे और न ही जंग उसे खराब करेगा - यह तुम्हारी पूँजी है। तुम्हारा निजी अस्तित्व जितना कम होगा उतना ही कम तुम अपने जीवन को अभिव्यक्त करोगे। जितनी अधिक धन सम्पत्ति तुम्हारे पास होगी उतना ही तुम्हारा जीवन अलगाव /अन्यदेशीकृत होगा और उतनी ही अधिक तुम्हारी अलगाव /अन्यदेशीकृत व्यक्तित्व की बचत होगी।